प्राक्कथन

किसी भी देश की प्रगति एवं सभ्यता का अनुमान उसकी कला एवं संस्कृति से लगाया जा सकता है क्योंकि कलाएँ उस देश की आत्मा होती है तथा संस्कृति की झलक इन्हीं कलाओं द्वारा झलकती है। कला के अन्तर्गत शास्त्रीय संगीत हमारी संस्कृति का दर्पण है, जिसे भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर होने का गौरत्व प्राप्त है।

शास्त्रीय संगीत एक ब्रह्मविषयक ज्ञान है, यह एक वर्ग विशेष का संगीत होने के कारण वर्ग विशेष के दायरे में रहकर ही फलता–फूलता रहा है क्योंकि यह शास्त्रबद्ध संगीत है जिसको परब्रह्म के रूप में स्वीकार किया गया है भारतीय जीवन में शास्त्रीय संगीत कला की भूमिका शताब्दियों से आध्यात्मिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक परम्पराओं पर आधारित रही है। यह अपूर्व काल से ही गुरू शिष्य परम्परा के उच्च आदर्शों में अध्ययन–अध्यापन का विषय रहा है और आज भी यह शिक्षण–प्रशिक्षण प्रणाली के अंतर्गत सामूहिक शिक्षण का विषय है और इसको सीखने के लिए ईश्वर प्रदत्त गुण भी होना चाहिए तथापि साधना के साथ पूर्ण समर्पित मन की भी आवश्यकता होती है। अतः यह अन्य दूसरे प्रकार के विषयों की तुलना में इसकी लोकप्रियता का कम होना स्वभाविक है।

आज के इस विकास की नयी तकनीकी के युग में विज्ञान के नये–नये आविष्कारों ने महान् कलाकारों की कृतियों को सुरक्षित रखने व जन–जन तक पहुँचाने हेतु महत्त्वपूर्ण कार्य किये किन्तु एक वह भी समय था जब कलाकारों के साथ उनकी कला भी लोप हो जाती थी परन्तु आज स्थिति इसके विपरीत है। आज आधुनिक समय में शास्त्रीय संगीत को जानने वालों की संख्या बढ़ी है, बड़े–बड़े शहरों में शास्त्रीय संगीत की सामूहिक शिक्षा दी जा रही है कई इलैक्ट्रॉनिक उपकरण जन संचार माध्यम, पत्र–पत्रिकाएँ, कई विद्यालय, महाविद्यालय, सरकारी व निजी संगीत संस्थाएँ, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा समारोह आयोजित होते हैं। जिसमें राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आज शास्त्रीय संगीत की लोकप्रियता का प्रचार–प्रसार बढ़ रहा है परंतु साथ ही साथ आधुनिकता के इस बदलते परिवेश में

शिक्षण–प्रशिक्षण की इस उच्च आदर्शवादी अमूल्य धरोहर की गरिमा को अक्षुण्ण रखने हेतु इसका संवर्धन व संरक्षण किया जाना अति आवश्यक है।

मैं शास्त्रीय संगीत विषय की छात्रा हूँ और कुमाऊँ क्षेत्र से हूँ। मुझे यहाँ बचपन से ही शास्त्रीय संगीत सीखने व सुनने को मिला, घर के सांगीतिक माहौल से ही मुझे शास्त्रीय संगीत को जानने की जिज्ञासा रही है जिस कारण मैंने उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र को शास्त्रीय संगीत के संवर्धन व संरक्षण के संदर्भ में इस शोध विषय का चुनाव किया।

मेरे इस शोध शीर्षक ''शास्त्रीय संगीत के संवर्धन व संरक्षण में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल का योगदान : एक अध्ययन'' पर कार्य करने का मेरा उद्देश्य यह है कि हमारी भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर शास्त्रीय संगीत किस प्रकार कुमाऊँ अंचल के विभिन्न छोटे–बड़े क्षेत्रों में फलता–फूलता विकसित एवं सुरक्षित रहा है, इसका संवर्धन व संरक्षण क्या आज भी कुमाऊँ में हो रहा है आदि कि जानकारी प्राप्त कर सकूँ। शास्त्रीय संगीत के कलाकार, संगीत ज्ञाता, विद्वान गुणीजनों तथा संगीत शिक्षक गणों की क्या स्थिति है, कौन–कौन शास्त्रीय संगीत की तीनों विधाओं को लेकर किन–किन क्षेत्रों में काम कर रहे हैं वह किस स्तर तक इस विधा को प्रोत्साहित कर रहे हैं, किन–किन कलाकारों ने हमारी सांस्कृतिक धरोहर को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने में अपनी भूमिका निभाई है वह किस प्रकार कार्यगर सिद्ध हुए उन्हें सरकार द्वारा कोई प्रोत्साहन मिल रहा है तो कौन–कौन अच्छा कार्य कर रहे हैं जिससे कुछ लाभ प्राप्त हो रहा है।

कुमाऊँ के किन–किन कलाकारों का अन्य प्रदेशों में यहाँ से जाना हुआ और वह आज किन क्षेत्रों में इसका संवर्धन व संरक्षण कर रहे हैं उसी प्रकार किन–किन कलाकारों का कुमाऊँ अंचल में आगमन हुआ और वह आज किस प्रकार से शास्त्रीय संगीत को प्रोत्साहित कर संवर्धन व संरक्षण प्रदान कर रहे हैं। मेरे शोध विषय का उद्देश्य रहा है साथ ही कुमाऊँ मण्डल में शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में शास्त्रकारों, गुणीजनों प्राध्यापक, संगीत प्रेमी, संगतकारों व कलाकारों से इस शोध विषय की जानकारी को साक्षात्कार के आधार पर प्रमाणित प्राप्त करने का मेरा

प्रयास रहा है। कुमाऊँ मण्डल में शास्त्रीय संगीत सम्मेलन, समारोह, प्रतियोगिता सम्मान व स्मृतिया जैसे – आचार्य चन्द्रशेखर पन्त जयन्ती, स्व. राजेश्वर शारदा स्मृति संगीत समारोह, पं. विष्णु नारायण भातखण्डे जयन्ती, स्व. दुर्गादास मुखर्जी स्मृति समारोह, डी. आर. पार्वतीकर संगीत समारोह, स्व. वेद प्रकाश गुप्ता स्मृति, स्व. कुमारी निधि संगीत स्मृति समारोह आदि के अतिरिक्त गुरू पूर्णिमा, सरस्वती पूजन, मल्हार संध्या, शास्त्रीय संगीत संध्या, शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता आयोजित की जाती है इनके द्वारा किस प्रकार शास्त्रीय संगीत को संवर्धन व संरक्षण प्राप्त हुआ है क्या युवा पीढ़ी इनमें रूचि ले रही है और कितनी जागरूक हो रही है कि जानकारी भी प्राप्त कर सकूँ साथ ही कुमाऊँ की विभिन्न सरकारी व निजी संस्थाओं में विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय में शिक्षा–शिक्षण का स्तर, संगीत विषय की स्थिति परिस्थिति को लेकर शोध कार्य के दौरान सर्वे के द्वारा जानकारी प्राप्त करने का मेरा प्रयास रहा है इसके अलावा संगीत शिक्षण संस्थाएं जैसे–श्री हरिसंकीर्तन संगीत सभा नैनीताल, पं. चन्द्रशेखर पन्त संगीत विद्यालय शारदा संघ नैनीताल, उदयशंकर भारतीय संस्कृति कला केन्द्र अल्मोड़ा, आकाशवाणी केन्द्र अल्मोड़ा, पिघलता हिमालय संगीत शोध समिति हल्द्वानी, स्वर संगम संगीत संस्थान हल्द्वानी, सांस्कृतिक कला केन्द्र हल्द्वानी, सुर और ताल संगीत संस्थान काशीपुर, विकास शास्त्रीय संगीत विद्यालय काशीपुर इत्यादि के अतिरिक्त भी बहुत सी अन्य संस्थाएँ भी सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं जिनके बारे में खोज कर उनकी जानकारी, स्थिति परिस्थिति को लेकर शास्त्रीय संगीत के संवर्धन व संरक्षण के विभिन्न तत्त्वों की जानकारी के पश्चात् जान सकूँ कि इस कार्य द्वारा लोगों का रूझान कैसा है क्या कुमाऊँनी लोग आज भी इस विधा को प्रोत्साहित करते हैं क्या सरकार द्वारा किये गये विभिन्न प्रकार के सरकारी व कुछ निजी प्रयास आदि भी शास्त्रीय संगीत की लोकप्रियता के क्षेत्र में अपनी सक्रिय भूमिका अदा कर रहे हैं इन सभी तत्त्वों के बारे में शोध कार्य कर उन्हें उजागर कर सकूँ ऐसा मेरा प्रयास रहा है और मैं इस विशिष्ट विधा की जानकारी प्राप्त करते हुए सभी तथ्यों पर प्रयास कार्यों के बारे में शोध कर उन्हें उजागर कर सकूँ जिसके अन्तर्गत कुमाऊँ मण्डल में शास्त्रीय संगीत के संवर्धन व संरक्षण से सम्बन्धित विभिन्न माध्यमों को

जानकर उन विविध तत्त्वों को सभी के सम्मुख प्रस्तुत करूँ, जो शास्त्रीय संगीत की लोकप्रियता में सक्रिय योगदान प्रदान कर रहे हैं

इस शोध प्रबन्ध के माध्यम से कुमाऊँ मण्डल में शास्त्रीय संगीत के परिपेक्ष में प्राप्त जानकारी को जनसाधारण के सम्मुख लाने का मेरा पूर्ण प्रयास रहा है ताकि मुझे तो शास्त्रीय संगीत की जानकारी उसका ज्ञान अर्जित होगा ही साथ ही मेरे सहपाठी, अन्य युवा वर्ग एवं जिज्ञासुओं के सम्मुख भी ये सभी पहलू स्पष्ट हो सकेंगे जिससे वे भी इस विषय के बारे में भलि–भाँति जान पायेंगे।

अतः भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर शास्त्रीय संगीत के संवर्धन व संरक्षण को बनाने व इसके संरक्षण के साथ ही मेरी आशा है कि इस प्रकार समस्त तथ्यों की जानकारी द्वारा शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार से लोकप्रियता के संदर्भ में मेरे कार्य करने का उद्देश्य सभी के लिए सार्थक सिद्ध हो पायेगा।